ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

न क्वेयं यथा त्वम्।

– सामवेद 203

हे प्रभो तुझ जैसा काई नहीं है। आप अनुपम हैं।
O God ! Verily there is none like you.
You are matchless.

वर्ष 42, अंक 40 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 26 अगस्त, 2019 से रविवार 1 सितम्बर, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

शिक्षक दिवस (5 सितम्बर) पर विशेष

शिक्षा के इतने दीप जले हैं, फिर अंधियारा क्यों गहराता?

.....महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणा से आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़ी क्रांति की है और इस रचनात्मक सेवा कार्य में आर्यसमाज के कदम निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं। आज पूरे देश में हजारों की संख्या में शिक्षण संस्थाए गतिशील हैं। आर्य समाज का सदैव प्रयास रहा है कि जब तक धरा पर अंधेरा रहेगा तब तक हम दीपक जलाते रहेंगे, ज्ञान का सवेरा होगा तो यह अंधेरा स्वयं भाग जाएगा। शिक्षक दिवस के अवसर पर जहां एक तरफ शिष्य अपने गुरु के प्रति सम्मान व्यक्त करता है वहीं शिक्षक को भी अपने आचरण और व्यवहार का अवलोकन करना चाहिए। क्योंकि शिष्य गुरु से ही सीखता है और गुरु केवल स्कूल का टीचर ही नहीं है माता-पिता तो प्रथम गुरु हैं।....

महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास के आरंभ में **"मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद"** शतपथ ब्राह्मण के इस अमृत वचन का उल्लेख किया है। । ऋषिवर का मानवमात्र के लिए संदेश है कि जब तक तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य ! वह संतान बड़ा भाग्यवान् ! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हों। जितना माता से संतानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं। जैसे माता संतानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है उतना अन्य कोई नहीं करता।

ऋषि दयानन्द जी के अनुसार प्रत्येक विद्यार्थी की प्रथम पाठशाला उसका घर ही है और उसका प्रथम शिक्षक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य अर्थात शिक्षक है। बच्चा जब जन्म लेता है तभी से उसकी दृष्टि मां को देखती है, थोड़ा-सा बड़ा होने पर बच्चा अपनी मां से ही अनुकरण की शुरूआत करता है। जैसे मां श्रृंगार करती है, बच्चा भी अपने माथे पर बिंदी लगा लेता है। इससे थोड़ा और बड़ा होने पर बच्चा अपने पिता का अनुकरण करने लगता है। अगर पिता डॉ. है तो बेटा भी डॉ. की तरह ही थर्मामीटर से बुखार चैक करता है और अगर पिता दुकानदार है तो बेटा भी उसी तरह से तराजू में समान तोलता है। लेकिन समय के साथ-साथ यह अनुकरण की धारा आगे बढ़ती जाती है और एक दिन जब बच्चा स्कूल जाता है तो फिर अपने शिक्षक को आदर्श मानने लगता है। अब स्थिति यह हो जाती है कि बच्चा घरवालों से ज्यादा शिक्षक की बात मानता है। यहां तक कि स्वयं माता अपने बच्चे की शिकायत शिक्षक से करती है और कहती है कि यह आपकी ही बात मानता है। इसे ऐसा करने के लिए कहिए अथवा ऐसा न करने के लिए कहिए। इससे ज्ञात होता है कि बचपन से लेकर विद्यार्थी जीवन तक

– शेष पृष्ठ 5 एवं 8 पर

वेद-स्वाध्याय

राज्य शासन और शिक्षा शासन का महान आधार – ब्रह्मचर्य व तप

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं वि रक्षति।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते।। – अथर्व० 11/5/17
ऋषिः **ब्रह्मा**।। देवता – **ब्रह्मचारी**।। छन्दः **अनुष्टुप्**।।

शब्दार्थ – राजा = राजा **ब्रह्मचर्येण तपसा** = ब्रह्मचर्य के तप द्वारा **राष्ट्रम्** = राष्ट्र की **वि रक्षति** = ठीक-ठीक रक्षा करता है और **आचार्यः** = आचार्य **ब्रह्मचर्येण** = ब्रह्मचर्य से ही **ब्रह्मचारिणम्** = ब्रह्मचारी को **इच्छते** = चाहता है।

विनय– जो राजा अजितेन्द्रिय, विलासी होता है उसके दुर्बल हाथों में राज्य की बागडोर सँभली नहीं रह सकती, क्योंकि जिस सरकार के अधिकारी व कर्मचारी विषयलोलुप, आचारहीन और लम्पट होते हैं उसकी प्रजा अरक्षित हो जाती है, एवं पीड़ित और दुःखी होती हुई वह प्रजा सरकार को शाप देती रहती है। ऐसी सरकार शीघ्र ही च्युत हो जाती है, अतः हे राजाओ ! यदि तुम सचमुच राज्य करना चाहते हो, प्रजा का ठीक-ठीक रंजन और रक्षण करना चाहते हो, प्रजा को धनसमृद्ध, ज्ञानविकसित और उन्नत बनाना चाहते हो तो तुम ब्रह्मचारी और तपस्वी बनो। तुम अपने जीवन को सदा संयमी और तेजस्वी बनाओ, अपने-आपको जितेन्द्रिय, कष्टसहिष्णु और ईश्वरपरायण बनाओ।

इसी तरह जो आचार्य शिष्य को शिक्षित करना चाहता है, उसे ब्रह्मचारी रखकर वेदज्ञान देना चाहता है, उसे स्वयं ब्रह्मचारी होना चाहिए, बड़ा उन्नत ब्रह्मचारी होना चाहिए। नहीं तो उसे ब्रह्मचारियों की इच्छा ही नहीं करनी चाहिए। वास्तव में यह आचार्य का अपना ब्रह्मचर्यमय और शान्तिप्राप्त जीवन ही होता है जिसके कारण वह इच्छा करता है कि और भी बहुत-से लोग ब्रह्मचारी बनें। वह चाहता है कि जितने ब्रह्मचारी बनें उतने थोड़े हैं। सचमुच आचार्य अपने ब्रह्मचर्य के बल द्वारा ही ब्रह्मचारियों को आकृष्ट करता है, उनपर शासन करता है, उन्हें अपने वश में रखता है, अपने-से जोड़े रखता है और उन्हें ब्रह्ममृत पिलाता हुआ परिपुष्ट करता रहता है। एवं कोई भी शासन-राज्यशासन या शिक्षाशासन, क्षत्रिय का शासन या ब्राह्मण का शासन-ब्रह्मचर्य के बिना नहीं चल सकता।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

दिल्ली विश्वविद्यालय में वीर सावरकर की मूर्ति स्थापना पर हुए विवाद के सन्दर्भ में

कोई सावरकर की गलती तो बताओ ?

.....सावरकर के ग्रंथ 'हिंदुत्व' को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, जनसंघ, भाजपा और हिंदू महासभा अपना वैचारिक मूलग्रंथ मानते रहे हैं लेकिन यदि आप उसे ध्यान से पढ़ें तो उसमें कहीं भी सांप्रदायिकता, संकीर्णता, जातिवाद या अतिवाद का प्रतिपादन नहीं है। वह जिन्ना और मुस्लिम लीग के द्विराष्ट्रवाद का कठोर उत्तर था। सावरकर के हिंदू राष्ट्र में हिंदुओं, मुसलमानों, सिखों, ईसाइयों, यहूदियों आदि को समान अधिकार देने की वकालत की गई है।....

वीर सावरकर, नेताजी सुभाषचंद्र बोस और शहीद भगत सिंह जी की प्रतिमाओं को लेकर दिल्ली विश्वविद्यालय में चले विवाद के बाद विश्वविद्यालय प्रशासन ने सावरकर के साथ लगाई गई शहीद भगत सिंह और नेताजी सुभाष चंद बोस की प्रतिमा को भी खंबे सहित हटवाकर साइड में रखवा दिया है। इन तीनों स्वतन्त्रता सेनानियों की एक साथ तीन मूर्तियां बनवाकर भाजपा के छात्र संगठन ने दिल्ली विवि के परिसर में लगवा दी थीं। लेकिन कांग्रेस, वामपंथी दलों और आम आदमी पार्टी के छात्र-संगठनों ने विशेषकर सावरकर की मूर्ति का विरोध किया और उस पर कालिख पोत दी।

ये सब उस देश में हुआ जिसके इतिहास में 800 वर्ष से अधिक शासन करने वाले विदेशी लुटेरों की कथित महानता के किस्से पढ़ायें जाते रहे हैं। इसके अलावा देश की राजधानी से लेकर अनेकों छोटे बड़े शहरों में मुगल शासको के नाम से सड़कें भी दिखाई देती हैं। यह भी बताया गया कि ये लोग हिन्दुओं पर जजिया कर यानि धार्मिक टैक्स लगाकर गरीब हिन्दुओं को गरीबी से विवश करके इस्लाम की शरण लेने मजबूर कर देते थे। इनके कारण ही अपने सतीत्व की रक्षा के लिए लाखों पद्मिनियाँ जौहर कर जाती थीं। हमारे धर्म स्थल तोड़ डाले, नालंदा जैसे विश्वस्तरीय विश्वविद्यालयों को आग की भेंट चढ़ा दिया पर इसके बावजूद भी ये लोग आज इतिहास महान है और अपना सर्वस्व जीवन देश की मिट्टी के नाम करने वाले क्रन्तिकारी देशद्रोही हैं।

असल में वीर सावरकर जैसे अमर क्रन्तिकारी की मूर्ति पर कालिख पोतने वाले वामपंथी और कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं को इतिहास के तथ्यों से कोई मतलब नहीं है। इनकी अपनी राजनीतिक जरूरतें झूठ से पूरी होती हैं तो ये झूठ को ही सच कहेंगे। क्योंकि आज की तारीख में इनकी जरूरत भी यही है। पिछले दिनों जेएनयू में देश विरोधी नारे लगाकर ये लोग अपनी मंशा खुलेआम जाहिर भी कर चुके हैं। इनका अपना एक अलग एजेंडा है। ये हर उस इतिहास पुरुष का विरोध करेंगे जिसने भी हिन्दू धर्म और इस राष्ट्र के लिए अपने प्राण न्योछावर किये हैं।

अब आप कहेंगे कि यह कोई तर्क है? इससे यह साबित कैसे हो जाता है कि ये लोग अपने धर्म के विरोधी हैं। तो हम बता दें कि जेएनयू ने सावरकर को हमेशा विलेन की भूमिका में दिखाया और बताया है। इनके अनुसार सावरकर जी कि गलती ये मानी जाये कि उन्होंने एक किताब लिखी हिंदुत्व-हू इज हिंदू। इस किताब में खासकर मुसलमानों को लेकर उनके जो विचार थे वह उनके विरोधियों को पसंद नहीं थे। सावरकर ने अपनी एक थ्योरी दी थी कि हिन्दू कौन है और भारत में रहने का हक किसे है? सावरकर हिंदुत्व की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि इस देश का इंसान मूलतः हिंदू है। इस देश का नागरिक वही हो सकता है जिसकी पितृ भूमि, मातृ भूमि और पुण्य भूमि यही हो। भारत हिन्दुओं की पुण्य भूमि है। लेकिन मुसलमानों की पुण्य भूमि नहीं हो सकती। ईसाइयों की पुण्य भूमि नहीं हो सकती।

या फिर सावरकर जी की गलती यह थी कि उन्होंने 1909 में लिखी पुस्तक द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस-1857 में सावरकर ने इस लड़ाई को ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आजादी की पहली लड़ाई न केवल घोषित किया, बल्कि 1911 से 1921 तक अंडमान जेल में रहे। 1921 में वे स्वदेश लौटे और फिर 3 साल जेल हुई। जेल में हिन्दुत्व पर शोध ग्रंथ लिखा। 9 अक्टूबर 1942 को भारत की स्वतंत्रता के लिए चर्चिल को समुद्री तार भेजा और आजीवन अखंड भारत के पक्षधर रहे। अब क्या इनके अनुसार सावरकर की गलती बस ये रही कि वह गांधी जी के अधिकांश कार्यों के विरोधी रहे?

इस विवाद में वेद प्रताप वैदिक जी ने सही कहा कि बेशक राजनीतिक दल और उनके छात्र-संगठन एक-दूसरे की टांग-खिंचाई करते रहें, यह स्वाभाविक है लेकिन वे अपने कीचड़ में महान स्वतन्त्रता सेनानियों को भी घसीट लें, यह उचित नहीं है। यह ठीक है कि सावरकर, सुभाष और भगत सिंह के विचारों और गांधी-नेहरू के विचारों में काफी अंतर रहा है, लेकिन इन महानायकों ने स्वतन्त्रता संग्राम में उल्लेखनीय योगदान किया है।

जहां तक विनायक दामोदर सावरकर का सवाल है, 1909 में जब गांधी और सावरकर पहली बार लंदन के इंडिया हाउस में मिले तो इस पहली मुलाकात में ही उनकी भिड़ंत हो गई। यह ठीक है कि सावरकर के ग्रंथ 'हिंदुत्व' को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जनसंघ, भाजपा और हिंदू महासभा अपना वैचारिक मूलग्रंथ मानते रहे हैं लेकिन यदि आप उसे ध्यान से पढ़ें तो उसमें कहीं भी सांप्रदायिकता, संकीर्णता, जातिवाद या अतिवाद का प्रतिपादन नहीं है। वह जिन्ना और मुस्लिम लीग के द्विराष्ट्रवाद का कठोर उत्तर था। सावरकर के हिंदू राष्ट्र में हिंदुओं, मुसलमानों, सिखों, ईसाइयों, यहूदियों आदि को समान अधिकार देने की वकालत की गई है। यदि सावरकर का स्वाधीनता संग्राम में जबर्दस्त योगदान नहीं होता तो प्रधानमन्त्री इंदिरा गांधी उन पर डाक टिकट जारी क्यों करतीं, संसद में सावरकर का चित्र क्यों लगवाया जाता?

आज इन लोगों को इंदिरा जी से ही कुछ सीखना चाहिए। इंदिरा जी का सूचना मन्त्रालय सावरकर पर फिल्म क्यों बनवाता? भारतीय युवा पीढ़ी को अपने पुरखों के कृतित्व और व्यक्तित्व पर अपनी दो-टूक राय जरूर बनानी चाहिए लेकिन उन्हें दलीय राजनीति के दल-दल में क्यों घसीटना चाहिए? वीर सावरकर विश्वभर के क्रांतिकारियों में अद्वितीय थे। उनका नाम ही भारतीय क्रांतिकारियों के लिए उनका संदेश था। वे एक महान क्रांतिकारी, इतिहासकार, समाज सुधारक, विचारक, चिंतक, साहित्यकार थे। उनकी पुस्तकें क्रांतिकारियों के लिए गीता के समान थीं। उनका जीवन बहुआयामी था। अब यदि ये सब सावरकर की गलतियाँ रहीं तो हर एक गुलाम देश की माँ चाहेगी कि उनकी कोख से सावरकर जैसे वीर पैदा हों और कोई माँ नहीं चाहेगी कि उसकी कोख से ऐसे बच्चे पैदा हों जो अपनी मातृ भूमि और अपने धर्म को रोदने वालों को महान बताएं और सावरकर जैसे वीर क्रन्तिकारी पर अँगुली उठाये।

- सम्पादक

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

अब ऐसे होगा श्री कृष्ण जी का जन्म

अक्सर भागवत कथा करने वाले पौराणिक लोग जिसे धर्म प्रचार कहते हैं, जब ये योगिराज श्री कृष्ण जी महाराज के बारे में मनघड़ंत बात कहते हैं तो सुनने वाले सोचते हैं, धर्म बरस है। दूसरा इन कथाओं को सुनकर, आम व्यक्ति यह भी सोच बैठता है कि मैं धार्मिक हो रहा हूं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हमारी पूरी की पूरी शिक्षा व्यवस्था में वैदिक धर्म के बारे कोई जानकारी नहीं दी जाती है। इस कारण आज लोग अपने महापुरुषों के जीवन चरित्र के विषय में जानकारी के लिए टीवी सीरियलों या तथाकथित बाबाओं के भरोसे हैं और यह दोनों धन कमाने के लिए अपने महापुरुषों के जीवन चरित्र से खिलवाड़ कर समाज के बड़े हिस्से को दिग्भ्रमित कर रहे है।

आप कुछ पल को कान्हा, बाल गोपाल की लीला छोड़ दीजिये। इनकी लीला समझिये, भजन गाते है, "मनिहार का वेश बनाया, श्याम चूड़ी बेचने आया" मतलब इनके अनुसार योगिराज श्री कृष्ण जी महाराज चूड़ियाँ बेच रहे हैं। इसके अलावा भी ये लोग श्री कृष्ण को लीलाधर, रसिक, गोपी प्रेमी, कपड़े चोर, माखन चोर और न जाने कथाओं में क्या-क्या लोगों को बता रहे होते हैं कि उनके 16 हजार गोपियाँ थी, वे सरोवर पर छिपकर कपड़े चुराने जाया करते थे।

इसलिए जो लोग आज योगिराज श्री कृष्ण को जानना चाहते हैं तो पुराणों के चश्मे से कृष्ण को नहीं समझा जा सकता। क्योकि वहां सिवाय रासलीला मक्खन चोरी के आरोपों के अलावा कुछ नहीं मिलेगा। इस्कान के मन्दिरों में नाचने से कृष्ण को नहीं समझा जा सकता। कृष्ण को समझने के लिए न मीरा के भजनों की जरुरत है न रसखान चौपाइयों की। न सूरदास के दोहों की जरुरत है और न किन्ही भागवत कथा कहने वाले बाबाओं की। कृष्ण को समझने के लिए बस स्वयं को समझना होता है, उसके लिए अर्जुन बनना पड़ता है।

.....स्वयं सोचिए जिसनें योग की परम ऊंचाई को प्राप्त किया हो, जिस कृष्ण के अन्दर ऐसा अध्यात्म हो जो जीवन की समस्त संभावनाओं को एक साथ स्वीकार कर लेता हो ऐसे योगिराज श्री कृष्ण की भविष्य के लिए बड़ी सार्थकता है। भविष्य को कृष्ण के सिद्धांतों की आवश्यकता है, इस भारत भूमि को इस वैदिक संस्कृति को योगिराज श्री कृष्ण आवश्यकता है। क्योंकि जब सबके मूल्य नियम सिद्धांत फीके पड़ जाएँगे सब के सब अँधेरे में डूब जाएँगे और इतिहास की मिटटी उन्हें दबा देगी, तब भी श्री कृष्ण जी का तेज चमकता हुआ रहेगा। बस लोग इस योग्य हो जाये कि कृष्ण को समझ पाए।.....

कृष्ण का यह तर्क है कि जब तक इन्सान के अन्दर स्वयं के अनिष्ट की आशंका है तब तक वह ईश्वर पर अविश्वास पैदा कर रहा है क्योंकि हानि लाभ, सुख दु:ख जीवन की लीला है, एक नाटक है, जिससे हर किसी को गुजरना होता है। इस नाटक में बिना भाग लिए कोई जीवन मंच से नहीं उतर सकता है। इसलिए कृष्ण सदा मुस्काते रहे, वह कभी गंभीर नहीं हुए। वरना अभी तक संसार में जितने लोग आये सब दुखी गंभीर दिखाई दिए। चाहें बुद्ध हो या जीसस, गुरु नानक हो या मोहम्मद। हर कोई चिंता में व्याप्त रहा किन्तु श्री कृष्ण जी दुनिया के एक अकेले ऐसे महापुरुष है जो दु:ख में भी मुस्कुराने का साहस करते हैं, जो मृत्यु को भी हंसकर स्वीकार करने की हिम्मत रखते हैं।

तभी अर्जुन से कृष्ण कहते है पार्थ जब तू ऐसा समझता है कि कोई मर सकता है, तब तक तू आत्मा पर विश्वास के बजाय शरीर पर विश्वास कर रहा है। क्योंकि तुझे पता ही नहीं है कि जो भीतर है, वह न कभी मरा है, न कभी मर सकता है, अगर तू सोचता है कि मैं किसी को मार सकूँगा, तो तू बड़ी भ्रांति में है, बड़े अज्ञान में है। क्योंकि मारने की धारणा ही शरीरवादी की धारणा है। आत्मवादी की नहीं। असल में योगिराज श्री कृष्ण मनुष्य जाति के इतिहास में एक अकेले महापुरुष हैं जो जीवन के सब अर्थों को स्वीकार कर लेते हैं। जो परमात्मा को अनुभव करते हुए युद्ध से विमुख नहीं होते, जो अधर्म के विरुद्ध खड़ा होने और बोलने का साहस रखते हैं।

किन्तु इसके विपरीत ब्रह्मवैवर्त नामक पुराण में कृष्ण के चरित्र का कलंकित चित्रण किया गया इसके उपरांत विभिन्न मत-मतांतरों के लोगों ने अपने तथाकथित नबियों, काल्पनिक ईश्वर के दूतों को बड़ा दिखाने के लिए इसी पुराण का सहारा लिया। इसके बाद तथाकथित दुराचारी गुरुओं ने धर्म और ईश्वर की आड़ में पंडाल सजा-सजाकर कृष्ण के महान चरित्र को कलंकित किया जो आज भी जारी है। जैसा कुछ समय पहले दिल्ली में एक बाबा वीरेंद्र देव दीक्षित अपने आश्रम में लड़कियों को निर्वस्त्र कर कहता था मैं कृष्ण हूं और तुम गोपी हो। ऐसे लोगो ने ही कृष्ण का जो असली वीरता का चरित्र था, जो साहस का था। जो ज्ञान का था, जो नीति का था जिसमें युद्ध की कला थी, जिसमें प्रेम था, करुणा थी, वो सब हटा दिया, नकली खड़ा कर दिया।

भला जिसके स्वयं घर में हजारों गायें हों और घर में दूध-दही व माखन की कोई कमी न हो वह क्यों दूसरे के घर माखन चुराकर खायेगा? क्या बाल लीला करने के लिए सिर्फ यही एक कार्य बचा था। भला जो द्रोपदी की अर्धनग्न देह को ढककर समस्त हस्तिनापुर लताड़ लगाता हो, वो क्यों भला गोपियों को नग्न देखने के लिए कपड़े चोरी करेगा? स्वयं सोचिए जिसनें योग की परम ऊंचाई को प्राप्त किया हो, जिस कृष्ण के अन्दर ऐसा अध्यात्म हो जो जीवन की समस्त संभावनाओं को एक साथ स्वीकार कर लेता हो ऐसे योगिराज श्री कृष्ण की भविष्य के लिए बड़ी सार्थकता है। भविष्य को कृष्ण के सिद्धांतों की आवश्यकता है, इस भारत भूमि को इस वैदिक संस्कृति को योगिराज श्री कृष्ण आवश्यकता है क्योंकि जब सबके मूल्य नियम सिद्धांत फीके पड़ जाएँगे। सब के सब अँधेरे में डूब जाएँगे और इतिहास की मिट्टी उन्हें दबा देगी, तब भी श्री कृष्ण जी का तेज चमकता हुआ रहेगा। बस लोग इस योग्य हो जायें कि कृष्ण को समझ पाए। जिस दिन ऐसा होगा कृष्ण के विचार का जन्म हो जायेगा, अधर्म हार जायेगा और एक पवित्रता और ज्ञान के साथ पुन: कृष्ण जन्म हो जायेगा, धर्म की स्थापना हो जाएगी।

- राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग

मौलवी सनाउल्ला का आदरणीय आर्य प्रधान

डॉक्टर चिरंजीवलालजी भारद्वाज जब आर्यसमाज बच्छोवाली लाहौर के प्रधान थे तो आर्यसमाज के उत्सव पर एक शास्त्रार्थ रक्खा गया। मुसलमानों की ओर से मौलाना सनाउल्लाजी बोल रहे थे और वैदिक पक्ष स्वामी योगेन्द्रपाल जी प्रस्तुत कर रहे थे। स्वामी योगेन्द्र पाल जी कुछ विषयान्तर-से हो गये। आर्यजनता स्वामीजी के उत्तर से असन्तुष्ट थी। आर्यसमाज का पक्ष वह ठीक ढंग से न रख सके।

कुछ लोगों ने प्रधानजी को सम्मति दी की आप यह घोषणा करें कि स्वामीजी की आवाज धीमी है, अत: आर्यसमाज की ओर से स्वामी नित्यानन्दजी बोलेंगे। डॉक्टर चिरंजीवजी इस सुझाव से रुष्ट होकर बोले, ''चाहते हो सत्य-प्रेम के लिए शास्त्रार्थ और बुलवाते हो उसके लिए मुझसे असत्य।'' लोग इस बात का क्या उत्तर देते। थोड़ी देर के पश्चात् श्री प्रधानजी ने घोषणा की, ''हम देख रहे हैं कि हमारे प्रतिनिधि स्वामी योगेन्द्रपालजी विषयान्तर बात करते हैं, ठीक उत्तर नहीं देते, अत: आर्यसमाज का प्रतिनिधित्व करने के लिए मैं उनके स्थान पर श्री स्वामी नित्यानन्दजी महाराज को नियुक्त करता हूँ।''

इस घोषणा का चमत्कारी प्रभाव हुआ। मुसलमान भाइयों पर इसका अधिक प्रभाव पड़ा। मौलवी सनाउल्ला साहिब तो डॉक्टरजी की इस सत्यनिष्ठा से ऐसे प्रभावित हुए कि वे सदा कहा करते थे, 'भाई! आर्यसमाज का प्रधान तो एक ही देखा।' और वे थे डॉ. श्री चिरंजीव लालजी।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र
सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth
मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

हिन्दी अपनाएं – देश का गौरव बढ़ाएं

– डॉ. वेद प्रताप वैदिक

आर्य समाज हमेशा से हिंदी भाषा का पक्षधर रहा है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती मूल रूप से गुजराती भाषी होने के बावजूद भी हिंदी को प्राथमिकता देते थे। स्वामी जी की कालजयी प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश हिंदी भाषा में प्रकाशित है। स्वामी जी संस्कृत को मातृभाषा और हिंदी को राजभाषा मानते थे। हिंदी भारत के अधिकांश हिस्से में प्रयोग की जाने वाली और विश्व में तीसरी सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली भाषा है और इसे लगभग सारे भारतवासी सरलता से समझ लेते हैं। आर्य समाज के मंचों से समय समय पर हिंदी को अपनाने पर आज भी अत्यधिक बल दिया जाता है। अत:आइए, हिंदी दिवस पर हम भी संकल्प धारण करें कि कम से कम अपने हस्ताक्षर हिंदी में ही करेंगे, हिंदी को ज्यादा से ज्यादा अपनाएंगे और अपने देश का गौरव बढ़ाएंगे। आर्य संदेश के इस अंक में प्रस्तुत है- विश्व विख्यात वरिष्ट पत्रकार, आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान और हिंदी भाषा प्रेमी श्री वेद प्रताप वैदिक जी का अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी को वरीयता प्रदान करने वाला आलेख। – ***सम्पादक***

.....हमने कहा 'अंग्रेजी हटाओ'। हमने यह कभी नहीं कहा है कि 'अंग्रेजी मिटाओ'। अब सवाल यह है कि अंग्रेजी कहाँ से हटे? न्यायालय से हटे, राजकाज से हटे, कारखानो से हटे, फौज से हटे, अस्पताल से हटे, पाठशाला-प्रयोगशाला से हटे, घर-द्वारा- बाजार से हटे। हटकर कहाँ जाए? पुस्तकालयों में जाए, विदेशी भाषा शिक्षण संस्थानों में जाए। वहाँ भी सारी जगह घेरकर पसरे नहीं। दुनिया की अन्य भाषाओं के लिए भी थोड़ी जगह रखे। हटना उसे सभी जगह से पड़ेगा। कहीं से थोड़ा, कहीं से ज्यादा। ....

'अंग्रेजी हटाओ' का मतलब यह कतई नहीं है कि हमें अंग्रेजी से नफरत है। यदि कोई स्वेच्छा से अंग्रेजी या दुनिया की अन्य भाषाएँ पढ़ना चाहे, उनके माध्यम से ज्ञान का अर्जन करना चाहे तो हमें प्रसन्नता ही होगी। लेकिन आपत्ति तब उपस्थित होती है जब ज्ञान के एक साधन को रूतबे का, विशेषाधिकार का, शोषण का हथियार बना लिया जाए।

'अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन' अंग्रेजी का नहीं, उसके रूतबे का, विशेषाधिकार का, उसकी शोषणकारी प्रवृत्ति का विरोधी है। इसलिए हमने कहा 'अंग्रेजी हटाओ'। हमने यह कभी नहीं कहा है कि 'अंग्रेजी मिटाओ'। अब सवाल यह है कि अंग्रेजी कहाँ से हटे? न्यायालय से हटे, राजकाज से हटे, कारखानो से हटे, फौज से हटे, अस्पताल से हटे, पाठशाला-प्रयोगशाला से हटे, घर-द्वारा- बाजार से हटे। हटकर कहाँ जाए? पुस्तकालयों में जाए, विदेशी भाषा शिक्षण संस्थानों में जाए। वहाँ भी सारी जगह घेरकर पसरे नहीं। दुनिया की अन्य भाषाओं के लिए भी थोड़ी जगह रखे। हटना उसे सभी जगह से पड़ेगा। कहीं से थोड़ा, कहीं से ज्यादा।

लुधियाना के कुछ प्राध्यापक बन्धुओं ने मुझसे कहा कि 'अंग्रेजी हटाओ' में से निषेधात्मकता की गन्ध आती है। यह 'निगेटिव' नारा है। मैंने पूछा, अहिंसा क्या है? अस्तेय क्या है? अपरिग्रह क्या है? क्या ये सब निषेध के सिद्धान्त नहीं है? महात्मा गाँधी का 'असहयोग' क्या था? इन्दिरा गाँधी का 'गरीबी हटाओ' क्या था? यह नारा निषेधात्मक ही नहीं है, बल्कि 'अंग्रेजी हटाओं' की भौंडी सी नकल भी था (क्योंकि गरीबी तो मिटाई जानी चाहिए)। निषेध से डरिये मत। सृष्टि के नियम को समझिये। बिना ध्वंस के निर्माण नहीं हो सकता। छोटा सा मकान भी बनाना हो तो नींव खोदनी पड़ती है। जो खुदाई के डर से नींव नहीं डालता, उसके मकान का अंजाम क्या होगा? वही होगा जो पिछले साठ सत्तर वर्षों से हिन्दी का हुआ। नतीजा क्या हुआ? अंग्रेजी अपने स्थान पर जमी रही और हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में एक नकली लड़ाई चल पड़ी। 'अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन' इस नकली लड़ाई का विरोध करता है। वह समस्त भारतीय भाषाओं को अंग्रेजी के वर्चस्व के विरूद्ध एक सशक्त चट्टान की तरह खड़ा करना चाहता है। जब तक अंग्रेजी नहीं हटती, भारतीय भाषाएँ एक नहीं होंगी।

'अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन और हिन्दी चलाओ आन्दोलन में बुनियादी फर्क है। हिन्दी आन्दोलन वाले चाहते हैं कि अंग्रेजी का स्थान हिन्दी ले ले। उन्हें इस बात की चिन्ता नहीं है कि अंग्रेजी की तरह हिन्दी भी शोषण का, विशेषाधिकार का और रूतबे का हथियार बन सकती है। फर्क इतना होगा कि आज अंग्रेजी के कारण जहाँ दो प्रतिशत लोग सारे देश को रोंद रहे हैं, वहां तीस प्रतिशत लोग बाकी सत्तर प्रतिशत लोगों के साथ अन्याय करेंगे। हम हर अन्याय के विरूद्ध लड़ना चाहते हैं, चाहे वह छोटा या बड़ा।

इसका मतलब यह नहीं है कि हमने सारे देश को जोड़ने वाली भाषा के सवाल पर विचार नहीं किया है। सारे देश को जोड़ने वाली भाषा कोई भी भारतीय भाषा हो सकती है। लेकिन इस काम के लिए हिन्दी सबसे अधिक अनुकूल भाषा होगी क्योंकि किसी भी स्वदेशी भाषा की तुलना में इसके बोलने वाले सबसे ज्यादा हैं। इसकी लिपि देवनागरी सरल और वैज्ञानिक है तथा यह भाषा भारत के सबसे बड़े इलाके में बोली जाती है और लगभग सारे देश में समझी जाती है। जहाँ तक हिन्दी देश की सारी भाषाओं को जोड़ती है, वहाँ तक हिन्दी को लाने में हमें एतराज नहीं है। लेकिन हिन्दी अन्य देशी भाषाओं का हक मारे, यह उचित नहीं है। हर प्रदेश में, उस प्रदेश की भाषा को पूरी तरह चलना चाहिए। केन्द्र में भी विभिन्न प्रदेशों से आने वाले लोगों को अपनी- अपनी भाषा के जरिये नौकरी पाने, संसद में बोलने, न्याय पाने और शिक्षा पाने का पूरा अधिकार होना चाहिए। उन्नति के अवसरों में हिन्दी को आड़े नहीं आना चाहिए। केन्द्रीय सरकार और केन्द्रीय संस्थानों का अपने तईं सारा काम-काज हिन्दी में चल सकता है, चलना चाहिए। लेकिन प्रदेशों से उनकी भाषा में आने वाले पत्रों का जवाब दिया जाना चाहिए। अगर आप देश के औसत आदमी को यह विश्वास दिलायेंगे कि बड़े से बड़े स्तर पर उसकी भाषा को नीचा नहीं देखना पड़ेगा तो काम चलाऊ हिन्दी सीखने में उसे जरा भी एतराज नहीं होगा। 'अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन' देश के करोड़ो लोगों को अंधेरे से उजाले की ओर ले जाना चाहता है। वह उत्तर और दक्षिण में, पूरब और पश्चिम में कोई भेद नहीं करता। उसके लिए सारे देश की गरीब, ग्रामीण, दमित पीड़ित विपन्न जनता एक है। वह इस सामान्य जनता की भाषाओं को आगे लाना चाहता है और एक छोटे से छोटे आदमी के दिल में भी यह अहसास पैदा करना चाहता है कि वह अपनी भाषा के जरिये बड़े से बड़े पद पर पहुँच सकता है। इसी आधार पर मैं कहता हूँ कि 'अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन' मनुष्य मात्र की मुक्ति का आन्दोलन है। पृथ्वी के किसी भी हिस्से पर यदि किसी भी मनुष्य की आत्माभिव्यक्ति का गला घोंटा गया तो 'अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन' चुप नहीं रहेगा।

अंग्रेजी के प्रति एकांगी प्रेम का परिणाम यह हुआ कि भारत अपने पुराने मालिक इंग्लैण्ड से और उसके नये उत्तराधिकारी अमेरिका से (एक पिछलग्गु की हैसियत में) काफी अच्छी तरह से जुड़ गया लेकिन बाकी दुनिया से उसके सीधे रिश्ते कायम नहीं हो पाये।

अंग्रेजी को विश्वभाषा मान लेने का सीधा दुष्परिणाम यह हुआ कि दुनिया के हर देश के साथ हम अंग्रेजी में व्यवहार करते हैं, चाहे वहाँ की भाषा जर्मन हो, रुसी हो, चीनी हो या फारसी। इसी का परिणाम है जिन देशों में हमारे राजदूतों को नियुक्त किया जाता है वे उन देशों की भाषा नहीं सीखते और अंग्रेजी में ही काम चलाने की असफल कोशिश करते रहते हैं। उस देश के राजनीतिज्ञ क्या सोचते हैं, उस देश की जनता का विचार प्रवाह किधर जा रहा है, उस देश के अखबार क्या लिख रहे है, यह हमारे राजदूतों को तभी पता चल सकता है और जल्दी तथा ठीक-ठीक पता चल सकता है जबकि वे स्थानीय भाषाएँ जानते हों। प्राय: होता यह है कि वे या तो दुभाषिए के जरिये सूचनाएँ और गुप्त जानकारियां इकट्ठी करते है या तब तक हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं जब तक कि लंदन और न्यूयार्क के अखबार उन्हें पढ़ने को न मिलें। घटना और चेकोस्लावाकिया में घटे, उनकी आँखों के सामने घटे और बुड़ा पोस्ट और प्राहा में बैठे हमारे राजदूत उन घटनाओं पर तब तक अपनी रपट नई दिल्ली नहीं भेजें जब तक उन्हें 'लन्दनिया' विवरण प्राप्त नहीं हो। इससे बढ़कर विडम्बना और क्या होगी? ऐसा इसलिए होता है कि वे भाषायी तौर पर अपाहिज है। वे अंग्रेजी की बैसाखी के सहारे चलते है। नकली बैसाखियाँ असली पैरों से अधिक प्यारी हो गई हैं जो कौम बैसाखियों पर चलती है। वह हजार साल की यात्रा के बावजूद भी स्वयं को उसी स्थान पर खड़ा हुआ पाती है, जहाँ से उसने पहला कदम उठाया था।

अंग्रेज के जमाने में केन्द्रीय अफसरों के लिए क्षेत्रीय भारतीय भाषाएँ सीखना आवश्यक था। जब आजादी आई तो सिर्फ अंग्रेजी जानना जरूरी रह गया। गुलामी में हम आधे गुलाम थे, आजादी में पूरे गुलाम हो गये। गुलामी के दिनों में कम से कम राजाओं की अदालतों में होने वाली उसकी किस्मत के फैसलों को वह समझ तो सकता था। उसकी अपनी जुबान में बहस और फैसले होते थे। आजादी ने उसकी अपनी समझ पर भी अंग्रेजी का पर्दा डाल दिया। जिस देश में व्यवस्था आम आदमी को गूंगा बहरा बनाती है, वहाँ प्रजातन्त्र सच्चा प्रजातन्त्र कैसे आ सकता है?

संविधान से अंग्रेजी के खात्मे का सबसे बड़ा परिणाम यह होगा कि एक छोटे से छोटे आदमी का सीना चौड़ा होगा। अपनी जुबान के जरिये वह किसी भी बड़े से बड़े पद पर पहुँचने की बात कम से कम सोच तो सकेगा।

'अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन' किसी राजनैतिक दल-विशेष का आन्दोलन नहीं है। इसमें सभी दलों, सभी तबको, सभी विचारों, सभी उपासना पद्धतियों, सभी प्रान्तों और सभी भाषाओं के लोगों का स्वागत है। इसके द्वार सभी के लिए खुले हैं। जो चाहे सो आवे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

एकरूपीय यज्ञ प्रशिक्षण शिविरों का शुभारम्भ

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में 10,000 याज्ञिकों द्वारा किया गया एकरूप यज्ञ के विहंगम दृश्य के सम्पूर्ण विश्व के आर्यजन साक्षी रहे। यज्ञ का यह अनुपम दृश्य आर्य समाज के इतिहास में एक महान कीर्तिमान है। इस क्रम में भविष्य में भी ऐसे वृहद यज्ञ के आयोजन हेतु दिल्ली के समस्त आर्य विद्यालयों एवं गुरुकुलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण देने के लिए विशाल प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। इसके लिए आर्य विद्यालय एवं गुरुकुलों के अधिकारीगण योजना बनाए और सामूहिक रूप से विद्यार्थियों को यज्ञ प्रशिक्षण की कक्षाओं का आयोजन करें। इसके लिए सभा की ओर से प्रशिक्षक की भी व्यवस्था की जाएगी। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

सतीश चड्डा, महामंत्री,
आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य, मो. 9313013123

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 150वें वर्ष के अवसर पर

स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन

आर्यजन कृपया ध्यान दें

- समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों - विद्यालयों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों एवं सहयोगी संस्थानों से निवेदन है कि वैदिक धर्म महासम्मेलन की उपरोक्त तिथियों को नोट कर लें।
- इन तिथियों में कोई भी अपना कार्यक्रम आयोजित न करें।
- सभी आर्यजन अपना रेलवे रिजर्वेशन तत्काल करा लेवें।
- सभी आर्यजन महासम्मेलन की तैयारियों में जुट जाएं।
- आर्यसमाज अपने कार्यक्रम के पत्रकों में आर्य महासम्मेलन की जानकारी अवश्य प्रकाशित करें।
- सम्मेलन में पधारने वाले समस्त आर्यजन पंजीकरण हेतु अपना नाम, पता, फोन नं., ईमेल आदि लिखकर aryasabha@yahoo.com, अथवा 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पर भेजें।
- ग्रुप में पधारने वाले आर्यजन ग्रुप लीडर के विवरण के साथ सूची बनाकर भेजें।
- आर्यजनों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से की जाएगी।

महासम्मेलन की सफलता के लिए अपना सहयोग 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम क्रॉस चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से '15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' के पते पर भेजें।
यदि आप अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं तो कृपया 9650183339 से संपर्क करें

निवेदक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
सार्वदेशिक आर्य वीर दल जिला आर्य प्रतिनिधि सभा वाराणसी महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ समृति न्यास वाराणसी

संपर्क सूत्र - प्रमोद आर्य (8052852321) दिनेश आर्य (9335479095) राजकुमार वर्मा (9889136019)

प्रथम पृष्ठ का शेष

माता-पिता और शिक्षक का अनुकरण मनुष्य जीवन के निर्माण का प्रमुख आधार बनता है।

आधुनिक परिवेश में घर रूपी पाठशाला से लेकर स्कूल, कॉलेज और उच्चशिक्षण संस्थानों तक पूरा का पूरा प्रारूप बदल चुका है। शिक्षा का मतलब डिग्री, डिप्लोमा प्राप्त करके अच्छी तन्ख्वाह वाली नौकरी प्राप्त करना भर रह गया है। चारों तरफ आपाधापी और अशांति व्याप्त है। रात-दिन भागदौड़ मची हुई है। आजका विद्यार्थी ये कैसा और किसका अनुकरण कर रहा है कि उदास, हताश, निराश-सा मुरझाया चेहरा, बिखरे हुए बाल, अस्त-व्यस्त चाल ढाल को ही वह अच्छा मानकर इधर-उधर भटक रहा है। कम्पीटिशन के जमाने में वह अपने लिए ऊंचा मुकाम हासिल करने के लिए किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार है। आज के समय में सरकारी मशीनरी और संसाधनों को नुकसान पहुंचाना भी विद्यार्थियों का फैशन-सा बनता जा रहा है। कहीं पर भी कोई छोटी सी बात हो तो बसें जला देना या और कुछ कर देना एक आम-सी बात हो गई है। इसके पीछे बहुत से कारण हो सकते हैं लेकिन सबसे बड़ा कारण पहला, दूसरा और तीसरा शिक्षक कहां पर है, क्या कर रहा है, और युवापीढ़ी को क्या परोस रहा है? इस पर विचार करना अत्यंत आवश्य है?

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी 5 सितंबर 2019 को अगले ही सप्ताह शिक्षक दिवस मनाया जाएगा। इस दिन भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन की जन्म जयंती पर अधिकांशतया बारहवीं कक्षा के विद्यार्थी अपने से छोटी कक्षाओं के छात्रों को शिक्षा देंगे। यह आयोजन बिल्कुल अभिनय के रूप में किया जाता है। जो विद्यार्थी शिक्षक बनकर अपने छोटे सहपाठियों को पढ़ाते हैं वे अपने वेशभूषा का चयन तो बखूबी करते हैं लेकिन क्या पढ़ाना है, कैसे पढ़ाना है इस पर कोई विचार नहीं होता, इसकी कोई तैयारी नहीं होती। शिक्षक का अर्थ है निर्माता। हर शिक्षक का उद्देश्य मानव समाज का निर्माण करना ही है। किंतु ये बड़ी विचित्र विडम्बना है कि हम अपनी संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों से लगातार कटते जा रहे हैं। हम भूल रहे हैं कि हम उन ऋषि मुनियों की संतान हैं जो पूरे विश्व के लिए आदर्श तथा पूज्य थे, हम उन वीरों की संतान हैं, जिनके सामने पापी और अत्याचारी थर-थर कांपा करते थे। आज के शिक्षक और विद्यार्थी किस ओर बहे जा रहे हैं? शिक्षक दिवस के मौके पर इस विषय पर तो विचार करना ही होगा।

प्राचीन समय में हमारे यहां गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के अनुसार अध्ययन की व्यवस्था थी। उस समय विद्यार्थी को केवल डिग्री प्राप्त करके जीविका का साधन कमाने की होड़ नहीं होती थी। बल्कि शारीरिक, मानसिक और आत्मिक रूप से सवल होकर जीवन के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया में विद्यार्थी इतना मजबूत बन जाता था कि कैसी भी स्थिति, परिस्थिति में कभी भी अपने मानवीय मूल्यों से समझौता नहीं करता था। क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य केवल यह नहीं है कि उन्नति प्रगति के नाम पर आज हम चांद और मंगल तक तो पहुंच गए हैं, यह अपने आपमें एक बहुत बड़ी उपलब्धि है लेकिन इसके साथ हमें यह भी सोचना चाहिए कि आज भी इंसान को धरती पर रहना क्यों नहीं आया? जहां प्रेम, सौहार्द के वातावरण में वाणी में मधुरता, चेहरे पर ताजगी, विचारों में नित नूतनता और उत्साह, परोपकार की चाह, सेवा-सहयोग, सहानुभूति के संस्कार हमारे खून में होते थे, किसी भी दुखी व्यक्ति को देखकर मन में करुणा और दया का भाव जागता था। आज ये सब कहां दिखाई देता है? स्वार्थ सिर चढ़कर बोल रहा है, शिक्षा व्यापार बनकर रह गई है। मानवता चित्कार रही है , पूछ रही है , कहां गई कल्याणकारी शिक्षा और संस्कार, कौन सुनेगा मानवता की पुकार? आज शिक्षा के इतने दीप जले हैं, फिर भी अंधियारा क्यों गहराता?

शिक्षक दिवस के मौके पर एक प्रेरक प्रसंग से जानिए शिक्षा के सही मायने, बात थोड़ी पुरानी है गुरुकुल से 3 विद्यार्थी स्नातक की परीक्षा पास कर घर लौट रहे थे, किंतु एक परीक्षा अभी बाकी थी। वह परीक्षा धर्म की थी, पर न जाने आचार्य ने धर्म की परीक्षा क्यों नहीं ली और विद्यार्थियों को उत्तीर्ण कर घर जाने की अनुमति प्रदान कर दी। तीनों युवक अपने गुरुजनों को प्रणाम कर घर की ओर निकल

- जारी पृष्ठ 8 पर

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के
150वें वर्ष के अवसर पर
स्वर्ण शताब्दी वैदिक धर्म महासम्मेलन
11-12-13 अक्तूबर, 2019 भाग लेने हेतु

वाराणसी यात्रा

आर्यजन अपने ग्रुप का रेलवे आरक्षण अवश्य करवा लें। आपके आवास की सामान्य व्यवस्था गुरुकुलों, आर्यसमाजों और धर्मशालाओं में नि:शुल्क की जाएगी।

दिल्ली एव आस-पास के आर्यजन महासम्मेलन में सम्मिलित होने अथवा अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :- श्री शिव कुमार मदान (9310474979) श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (8010293949) श्री सुनेहरीलाल यादव (8383092581) श्री सुखवीर सिंह (9350502175) श्री सतीश चड्डा (9313013123)

निवेदक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

Swami Dayanand, Aryasamaj and his contribution in Dalit upliftment

- Dr. Vivek Arya

Continue from last issue

Swami Ji went to the Lucknow A.I.C.C. meeting of June 1922 especially to push a plan of action for the removal of untouchability. His proposal to appoint a sub-committee on untouchability was accepted, but some parts of it were amended. The sum of two lakhs of rupees was first substituted for the original five lakhs proposed and then even that was watered down by substituting the phrase 'as much as could be spared'. But misunderstandings kept cropping orally, but when he started preparatory work and asked for some money, he was informed that the working committee had appointed until a report had been received from the sub-committee. It was all a sorry mess, letters came and went, nothing was being done, and the swami resigned in disgust. His postscript to the whole story as follows- The subcommittee did no business in placing the annul report of the congress before its session at Gaya; the Secretary simply remarked that no work could be done by the sub-committee as no substitute for Swami Shraddhananda could be found. (INCO.P-181) Swami Shraddhananda did not receive any support from the congress and Mahatama Gandhi for eradicating the sin of untouchability. Instead of that he received the message from cocanada session of congress in which Maulana Mohammad Ali the president of that session proposed to divide the so-called untouchables in equal halves between Hindus and the Muslims. (INCO.p-188)

Palghat court verdict

On 13th Nov. 1925 name of aryasamaj and swami ji published in all major newspapers of south India. On the opening day of car festival the divisional magistrate promulgated an order prohibiting aryasamaj converts from entering the orthodox Hindu streets. This led to a public protest meeting, which passed among others the following resolution. That "this meeting begs to express its unqualified condemnation of the utterly illegal procedure and policy of religious interference adopted by the Madras Government in extending its order of prohibition to the aryasamaj converts from the depressed classes while such converts to Christianity and Mohammedanism are not so prohibited " (leader 19.nov,1924)

The leader of 21st Nov., 1925 condemned the intolerant and wholly short sighted attitude of the orthodox Hindus and praised Swami Shardhananda for taking up their cause and valiantly leading the movement.

Swami Ji in response started a new weekly name liberator in English for special purpose of communicating his views to the intelligentsia of south India where the evil of untouchability existed in most objectionable and inhuman form (leader 5, April 1925) Its aim was strongly stated by swami ji- The uplift of the untouchables and their assimilation in the Hindu polity is the very plinth on which alone the edifice of free India can be constructed. Therefore, the liberator will make the cause of the so-called untouchables its main concern. This doctrine of untouchability is the gangrene of Hindu polity. Diehard vanity, deep- rooted prejudice, degenerating ignorance and doping superstition are the germs that feed this gangrene. Each one of these has to be attacked for getting rid of this gangrene. (Leader 4, April 1926)

Thus we reach an inference that the later part of swami ji life was devoted entirely for the upliftment of the depressed Hindus.

The above mentioned are few glimpses of work of aryasamaj and its great leaders after Swami Dayanand. The foremost point is that many those who were born in high castes were out casted, faced social boycott, physical and death threat, prevented from using wells , prevented from marrying in community , they faced all sort of consequences but did not stopped their missionary work. They were true soldiers of Swami Dayanand. Many reformers had arrived in last centuries to eradicate the evil of untouchability like Jyotiba Phule, Dr Ambedkar etc but most unique about soldiers of swami Dayanand is that they are only examples of high caste Hindu working for down trodden and untouchables.

23वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन स्थल पर होगी तत्काल पंजीकरण की व्यवस्था

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 23वां परिचय सम्मेलन **1 सितम्बर, 2019** को **आर्यसमाज आदर्श नगर, नई दिल्ली** में प्रात: 10 बजे से आयोजित किया जा रहा है।

सम्मेलन में भाग लेने के लिए पंजीकरण कराया जाना अनिवार्य एवं आवश्यक है। समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फॉर्म इसी पृष्ठ पर पृथक से प्रकाशित किया गया है। इस पंजीकरण फार्म को **www. thearya samaj.org** से डाउनलोड भी किया जा सकता है। फोटोप्रति भी मान्य है। पंजीकरण फार्म **www.matrimony.thearyasamaj.org** पर ऑनलाईन पंजीकरण भी कर सकते हैं। **सम्मेलन स्थल - आर्यसमाज आदर्श नगर में 1 सितम्बर, 2019 को तत्काल पंजीकरण की भी व्यवस्था की गई है।**

- अर्जुनदेव चद्दा
राष्ट्रीय संयोजक (मो. 9414187428)

साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका रजिस्टर का प्रकाशन

आर्यसमाज द्वारा आयोजित साप्ताहिक सत्संगों में यज्ञ सत्संग के दौरान साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका में आर्य महानुभाव अपने-अपने हस्ताक्षर करते हैं जो कि आर्य समाज के उप-नियमों के अनुसार अनिवार्य भी हैं। किंतु कहीं-कहीं पर रजिस्टर के स्थान पर कॉपी अथवा रजिस्टर की स्थिति जीर्ण-शीर्ण होती है। अत: दिल्ली की आर्यसमाजों में उपस्थिति रजिस्टर की एकरूपता हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने साप्ताहिक सत्संग उपस्थिति पंजिका-रजिस्टर का प्रकाशन किया है। रजिस्टर की हार्ड बाईडिंग सुंदर मजबूत कागज, आर्य समाज, दिनांक, पता, उपस्थिति और वक्ता का नाम, फोन नं., विषय आदि सुंदर तरीके से दिए गए हैं जिससे आर्यसमाज के सत्संगों का पूरा रिकार्ड पंजिका में अंकित हो सके।

आप भी अपनी आर्यसमाज का उपस्थिति रजिस्टर तुरन्त बदलें और सभा द्वारा प्रकाशित रजिस्टर को अपनाएं।

आकार 10''×15'' पृष्ठ 104 मूल्य 200/- रुपये। मात्र

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) - 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

सम्पर्क सूत्र - 011-23360150, 9540040339

पंजीकरण संख्या : ॥ ओ३म्॥ रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

23 वाँ आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली - 110001 टेलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959

Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

1. युवक/युवती का नाम :..... गोत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : .....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई .....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता/..... .....व्यक्तिगत मासिक आय.....

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रुप से लगाएं।"

: पारिवारिक :

6. पिता/सरंक्षक का नाम ..... व्यवसाय: ..... मासिक आय.....
7. पूरा पता:.....

दूरभाष :..... मोबा.:..... ईमेल :.....

8. मकान निजी/किराये का है.....
9. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
10. भाई - अविवाहित.....विवाहित..... । बहिन- अविवाहित.....विवाहित..... ।
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? (आवश्यक).....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✓) लगाएं :☐ विधुर : ☐ विधवा : ☐ तलाकशुदा : ☐ विकलांग :
14. **विशेष:**

मैं.....घोषणा करता हूँ कि इस फार्म में मेरे द्वारा दी गई समस्त जानकारी एवं तथ्य पूर्णतया सत्य है।

दिनांक : .....

हस्ताक्षर अभिभावक/ प्रत्याशी

कार्यक्रम स्थल :- आर्य समाज, गली नं. 11, सुशीला रोड़ आदर्श नगर, दिल्ली-110033

दिनांक : 1 सितम्बर 2019, रविवार **समय :- प्रात: 10.00 बजे से**

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :

श्री अर्जुनदेव चद्दा, राष्ट्रीय संयोजक मो. 09414187428

आर्य समाज, गली नं. 11, सुशीला रोड़, आदर्श नगर, दिल्ली-110033

श्री रविन्द्र बत्रा, प्रधान, मो. 07011496219, श्री प्रविण बत्रा, मंत्री, मो. 09868993911, श्री देवेन्द्र जावा, कोषाध्यक्ष, मो. 09212114202

नोट : 1. ई-मेल एड्रेस, मोबाईल व फोन नम्बर लिखना आवश्यक है

2. विकलांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी पूर्ण सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है। यह फार्म ऑनलाइन भी भर सकते है लिंक - matrimony.thearyasamaj.org
5. पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा नई दिल्ली के नाम रु. 300/-(तीन सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिस बैंक खाता सं. 910010001816166 करोल बाग शाखा IFSC-UTIB 0000223 में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तारीख से 10 दिन पूर्व भेज दें, ताकि प्रत्याशी का विवरण पुस्तिका में प्रकाशित किया जा सके।
6. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लायें। कॉलम नं. 11 भरना आवश्यक है।
7. रजिस्ट्रेशन शुल्क 300/- प्राप्त किये जाने पर ही रजिस्ट्रेशन फार्म स्वीकार किया जायेगा।

युवक और युवतियाँ परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें- महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य समाज 15-हनुमान रोड़ नई दिल्ली का
श्रावणी उपाकर्म एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर 15-हनुमान रोड़ के तत्वावधान में 15 अगस्त से लेकर 24 अगस्त 2019 तक श्रावणी उपाकर्म एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. कर्णदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सामूहिक यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें विधिवत् यज्ञोपवीत संस्कार कराया गया और यज्ञोपवीत के महत्व को बताते हुए विशेष प्रवचन का भी आयोजन किया गया। 18 अगस्त को हैदराबाद सत्याग्रह को बलिदान दिवस के रूप में मनाया गया। 20 से 24 अगस्त तक लगातार यज्ञ, भजन एवं प्रवचनों का कार्यक्रम चला। प्रात:काल 7:30 बजे से 9:15 बजे तक यज्ञ, आचार्य श्री श्यामदेव जी एवं डा. कर्णदेव जी के ब्रह्मत्व में किया गया और सायंकाल 7 बजे से मधुर भजन श्रीमती गरिमा शास्त्री जी द्वारा प्रस्तुत किए गए। प्रतिदिन सायं 8 से 9 बजे आचार्य श्यामदेव जी के वेद मंत्रों पर आधारित प्रवचन सारगर्भित और प्रशंसनीय रहे।

24 अगस्त 2019 को यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरांत आदर्श महापुरुष योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन पर आधारित भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में गुरुकुल और विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने उत्साह से भाग लिया। प्रतियोगिता की अध्यक्षता श्री श्यामदेव जी ने की। प्रतियोगिता के परिणामस्वरूप प्रथम स्थान रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकन्ड्री स्कूल राजा बाजार, नई दिल्ली की छात्रा कुमारी नजमुश ने प्राप्त किया। इसके साथ द्वितीय स्थान आर्य अनाथालय पटौदी हाऊस के विद्यार्थी सुमित कुमार ने प्राप्त किया तथा तृतीय स्थान पर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल रोहिणी-7 की छात्रा अनुशका गोयल ने प्राप्त किया। सभी सफल प्रतियोगी छात्रों को पुरस्कार प्रदान किए गए और आर्य समाज के प्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी ने सभी का धन्यवाद किया। - ***विजय दीक्षित, मन्त्री***

आर्य महासम्मेलन एवं शोभा यात्रा

5 एवं 6 अक्तूबर 2019 शनिवार व रविवार को जिला आर्य प्रतिनिधि सभा सहारनपुर उत्तर प्रदेश द्वारा अग्रवाल धर्मशाला, निकट खुमरान पुल सहारनपुर में आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर 5 अक्तूबर को प्रात: 10 बजे गांधी पार्क से अग्रवाल धर्मशाला तक विशाल शोभा यात्रा भी निकाली जाएगी और 6 अक्तूबर को प्रात: 8 बजे यज्ञ का आयोजन होगा तथा 2 बजे से वेद का प्रचार-प्रसार, नशामुक्ति आदि विषयों पर 5 बजे तक भजन एवं उपदेश के विशेष कार्यक्रम होंगे। - ***मन्त्री***

श्रावणी उपाकर्म एवं जन्माष्टमी महोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर अशोक विहार-1, दिल्ली-52 के द्वारा चतुर्मास श्रावणी उपाकर्म एवं जन्माष्टमी महोत्सव दिनांक 21 अगस्त से 24 अगस्त तक आयोजित किया गया। इस अवसर पर यज्ञ डॉ. चन्द्रशेखर शर्मा जी के ब्रह्मत्व में हुआ। भजन श्रीमती सुदेश आर्या जी के हुए। डॉ. चन्द्रशेखर शर्मा जी ने प्रवचनों में वेद मन्त्रों के द्वारा जीवन जीने की कला सिखाई। इस अवसर पर 'सनातन संस्कृति के रक्षक श्रीकृष्ण' विषय पर प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

- ***प्रेम सचदेवा, प्रधान***

वार्षिकोत्सव एवं जन्माष्टमी महोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सफदरजंग एन्कलेव द्वारा दिनांक 22 से 25 अगस्त तक यज्ञ भजन प्रवचनों का आयोजन किया गया। इसमें यज्ञ ब्रह्मा आचार्य कुलदीप जी रहे। भजन एवं संगीत श्री लक्ष्मीकान्त आर्य जी द्वारा प्रस्तुत किया गया। व्याख्यान आर्य रविदेव गुप्ता जी, डॉ. महेश विद्यालंकार जी एवं आशुकवि श्री विजय गुप्त जी के हुए।

- ***स्वदेश कुमार शर्मा, मन्त्री***

स्थापना दिवस एवं वेदारंभ संस्कार महोत्सव

31 अगस्त से 1 सितम्बर 2019 को गुरुकुल महाविद्यालय पूठ (पुष्पावती) गढ़ मुक्तेश्वर हापुड़ (उत्तर प्रदेश)के प्रांगण में गुरूकुल का स्थापना दिवस एवं वेदारंभ संस्कार महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर सामवेद परायण महायज्ञ का विशेष आयोजन होगा। मुख्यरूप से यज्ञ, प्रवचन, वेदारंभ संस्कार के साथ-साथ भजन सम्मेलनों का आयोजन किया जाएगा। इस कार्यक्रम में स्वामी प्रणवानन्द जी, आर्य नेता सत्यानंद आर्य, स्वामी धर्मवेश्वरानंद जी आदि महानुभावों का सानिध्य प्राप्त होगा। - ***आचार्य***

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2009 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1000/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण 2029 तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। - ***सम्पादक***

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

श्रावणी पर्व एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में श्रावणी पर्व एवं जन्माष्टमी समारोह 29 अगस्त से 8 सितम्बर तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर 1 सितम्बर को महिला सम्मेलन आयोजित होगा। 2 से 7 सितम्बर तक डॉ. सुकामा आचार्य जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ एवं प्रवचन होंगे। यज्ञ पूर्णाहुति एवं समापन सम्मेलन 8 सितम्बर को प्रात: 8:15 से 1 बजे तक होगा। - ***मन्त्री***

गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज घौण्डा, दिल्ली-53 के तत्त्वावधान में दिनांक 25 अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव एवं श्रावणी पर्व के अवसर पर गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ ब्रह्मा पं. भूदेव साहित्याचार्य जी एवं भजन कु. सुकृति आर्या जी एवं श्री हरीशचन्द्र आर्य जी के हुए। ध्वजारोहण चौधरी कीरत सिंह, लाला जयकुमार जी एवं श्री मुरारी शर्मा जी ने किया। प्रेम और सौहार्द के वातावरण में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- ***पवन बन्याल, मन्त्री***

शोक समाचार

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री
श्री हंसमुख परमार जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के मन्त्री, आर्य वीर दल गुजरात के संचालक, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य एवं महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा के ट्रस्टी श्री हंसमुख भाई परमार जी का दिनांक 24 अगस्त, 2019 को 70 वर्ष की आयु में अचानक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 26 अगस्त को आर्यसमाज टंकारा में सम्पन्न हुई जिसमें गुजरात की अनेकों आर्य संस्थानों के साथ-साथ सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों ने भी पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री विद्या सागर वर्मा जी को पत्नीशोक

आर्यसमाज मयूर विहार के सदस्य एवं कजाकिस्तान में पूर्व भारतीय राजदूत श्री विद्या सागर वर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुधा वर्मा जी का 23 अगस्त, 2019 को नोएडा से दिल्ली लौटते समय सड़क दुर्घटना में निधन हो गया। श्री विद्या सागर वर्मा जी भी इस दुर्घटना में घायल हो गए और जिनका चिकित्सालय में उपचार चल रहा है। परमात्मा उन्हें शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्रदान करें।

श्रीमती सुधा वर्मा जी का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ लोधी रोड शमशान घाट पर 24 अगस्त को किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 26 अगस्त, 2019 को सायं 4 बजे आर्यसमाज मयूर विहार फेज-1 में सम्पन्न हुई, जिसमें निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

पूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री अरुण जेटली जी का निधन

बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी पूर्व केंद्रीय वित्तमंत्री श्री अरुण जेतली जी का 24 अगस्त को लगभग 67 वर्ष की आयु में एम्स अस्पताल में निधन हो गया। श्री जेतली जी लंबे समय से अस्वस्थ थे, किंतु अंतिम समय तक भारत राष्ट्र के प्रति उनकी निष्ठा भावना अत्यंत प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। विद्यार्थी जीवन से राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने वाले जेतली जी सुप्रीम कोर्ट के एक कुशल वकील के रूप में भी विख्यात रहे। स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता जैसे महान गुणों के साथ कुशल प्रवक्ता की अनुपम भूमिका का सफल निर्वहन करना भी जेतली जी की एक विशेष पहचान थी। आर्य अनाथालय, पटौदी हाउस, दरियागंज नई दिल्ली एवं जीवन प्रभात आश्रम गांधीधाम के विकास में उनका विशेष योगदान प्राप्त हुआ।

श्री मिश्री लाल गुप्ता जी का निधन

आर्यसमाज शकरपुर दिल्ली-92 के पूर्व प्रधान श्री मिश्रीलाल गुप्ता जी का दिनांक 12 अगस्त को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा अग्रवाल धर्मशाला शकरपुर में सम्पन्न हुई, जिसमें क्षेत्र के आर्यजनों ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

श्री ओमप्रकाश साहू जी का निधन

आर्यसमाज जहांगीरपुरी के उप प्रधान श्री ओम प्रकाश साहू जी का 17 अगस्त, 2019 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 18 अगस्त को निगम बोध घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा उनके जहांगीरपुरी के आवास पर 28 अगस्त को सम्पन्न हुई, जिसमें क्षेत्र के आर्यजनों ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

पृष्ठ 4 का शेष

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 26 अगस्त, 2019 से रविवार 1 सितम्बर, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 29-30 अगस्त, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 28 अगस्त, 2019

प्रथम पृष्ठ का शेष

पड़े। गुरुकुल से थोड़ा-सा मार्ग ही तय किया था कि सूर्य ढलने लगा, थोड़ी दूर चलने के बाद उन्होंने देखा कि आगे की पगडंडी पर बहुत कांटे पड़े हैं। पहले युवक ने उन कांटों के ऊपर से छलांग लगाई और वह पार हो गया, दूसरा युवक पगडंडी की बजाए नीचे खेत में से नया रास्ता बनाकर पार कर गया, लेकिन तीसरा स्नातक युवक वहीं रुककर कांटों से भरी राह को साफ करने लगा। उसके साथियों ने कहा कि किस चक्कर में पड़े हो, हटटे-कटटे पहलवान हो छलांग लगाकर आगे क्यों नहीं बढ़ते, रात्रि होने को है, रास्ता लंबा है, अंधेरा हो जाएगा। इस युवक ने गहरी मुस्कान के साथ सहज भाव से कहा कि रात होने को है इसी कारण तो इन कांटों को हटाने का काम कर रहा हूं, कहीं अंधेरें में किसी अंजाने मुसाफिर का पैर इन कांटों पर पड़ेगा तो उसे बहुत पीड़ा होगी और वह पीडा बड़ी कष्टकारी होगी। इसलिए रास्ते से कांटों को हटाना बहुत जरूरी है, ये तीनों आपस में बात ही कर रहे थे कि गुरुकुल का आचार्य झाड़ी के पीछे से सामने आ गया और तीसरे छात्र से प्रसन्न होकर कहने लगा कि तुम धर्म की परीक्षा में भी उत्तीर्ण हो। सचमुच तुम विद्या की त्रिवेणी में स्नातक हो गए हो। अत: जाओ समाज और राष्ट्र में फैले अंधेरे को दूर करो। आज मानव जाति की राह में बहुत से कांटे हैं, पूरा अंधेरा होने से पहले उन्हें दूर करो। यह है गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का आदर्श। इस तरह होता था मानव निर्माण। आज के समय में शिक्षा केवल महंगी ही नहीं हुई बल्कि शिक्षा के मायने भी बदल गए हैं।

महर्षि दयानंद जी की प्रेरणा से आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़ी क्रांति की है और इस रचनात्मक सेवा कार्य में आर्यसमाज के कदम निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं। आज पूरे देश में हजारों की संख्या में शिक्षण संस्थाए गतिशील हैं। आर्य समाज का सदैव प्रयास रहा है कि जब तक धरा पर अंधेरा रहेगा तब तक हम दीपक जलाते रहेंगे, ज्ञान का सवेरा होगा तो यह अंधेरा स्वयं भाग जाएगा। शिक्षक दिवस के अवसर पर जहां एक तरफ शिष्य अपने गुरु के प्रति सम्मान व्यक्त करता है वहीं शिक्षक को भी अपने आचरण और व्यवहार का अवलोकन करना चाहिए। क्योंकि शिष्य गुरु से ही सीखता है और गुरु केवल स्कूल का टीचर ही नहीं है माता-पिता तो प्रथम गुरु हैं। इसलिए हमें गुरु-शिष्य परंपरा की गरिमा को भी अवश्य समझना चाहिए। व्याकरण के महान आचार्य पाणिनि जी ने गुरु शब्द की निष्पत्ति अनेक धातुओं से की है। गृ सेचने, गृ निगरणे, गृ विज्ञाने, गृ शब्दे, गृ स्तुतौ, गुरी उद्यमने इन सब धातुओं से गुरु शब्द की उत्पत्ति होती है। लेकिन निष्कर्ष एक ही है कि गुरु वही जो अज्ञान, अंधकार को दूर कर वेदादि शास्त्रों का ज्ञान कराएं, आत्मतत्व का बोध कराए, जीवन जीने की कला सिखाए, भय-भ्रम के अंधेरों को दूर करके सुपथ पर चलना सिखाए, अत: आईए, इन्हीं भाव और अर्थों के साथ अपना शिक्षक दिवस मनाएं। - *आचार्य अनिल शास्त्री*

प्रतिष्ठा में,

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा - हम सब का दायित्व

इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, मो. 9540040339

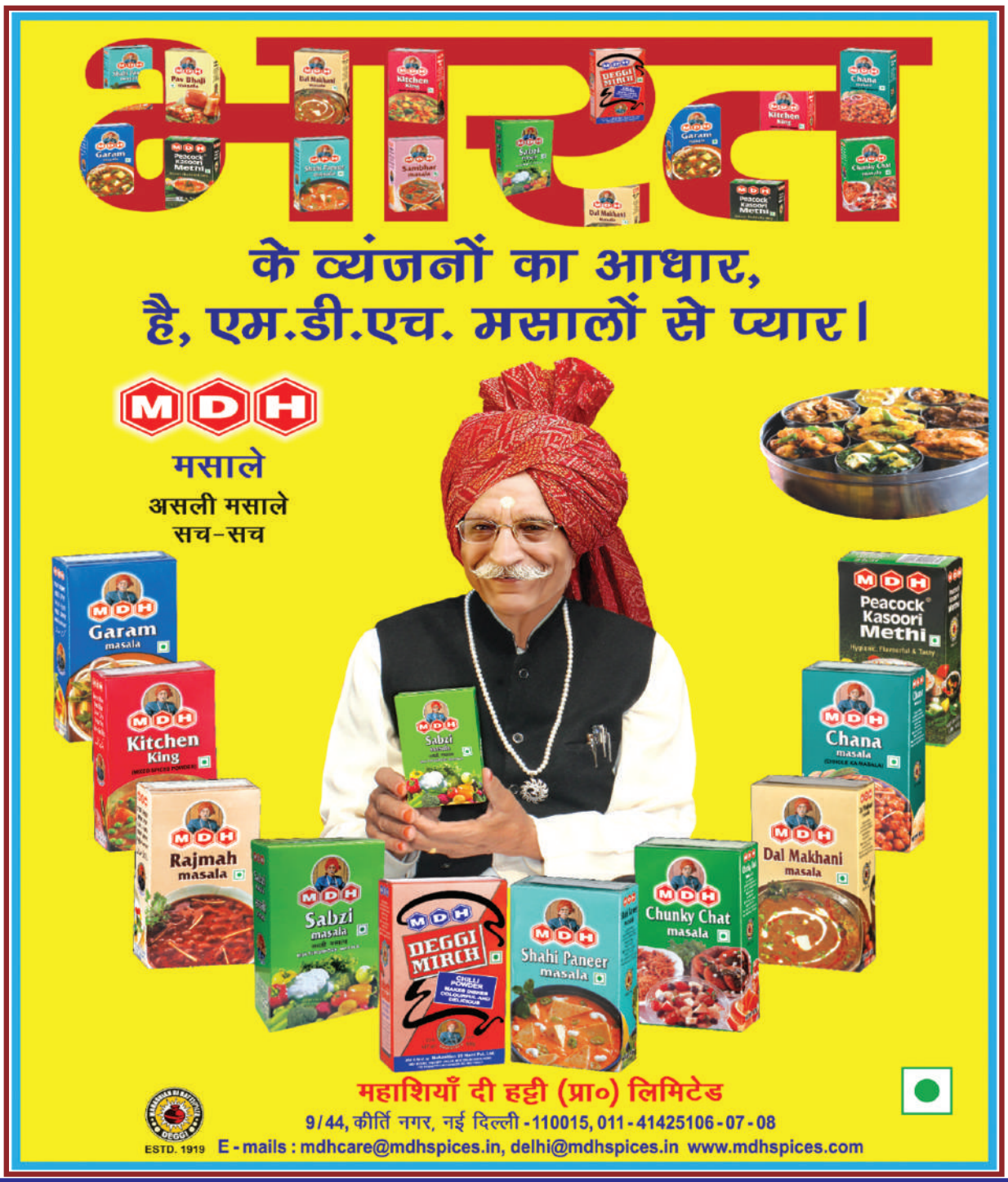

वैचारिक क्रान्ति के लिए
महर्षि दयानन्दकृत
"सत्यार्थ प्रकाश"
पढ़ें और पढ़ावें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह